National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 157-160
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. महमद नयास पाशा
सहायक प्राध्यापक,
क्रिस्तुजयंति विश्वविद्यालय,
के नारायणापुरा,
बेंगलूरू 560077

Correspondence:
डॉ. महमद नयास पाशा
सहायक प्राध्यापक,
क्रिस्तुजयंति विश्वविद्यालय,
के नारायणापुरा,
बेंगलूरू 560077

जनजातीय सांस्कृतिक विरासत और स्वदेशी प्रथाएँ

डॉ. महमद नयास पाशा

शोध सार :

विभिन्न जनजातियों का पुनर्वास, आहार, चिकित्सा, महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार, कुछ समुदायों का परिवर्तन, जनजातियों का विकास और मौलिक अधिकार, जनजातियों की पुनर्परिभाषा, विश्वास, सांस्कृतिक प्रथाएँ, कल्याणकारी कार्यक्रम, सामाजिक परिस्थितियाँ, हस्तशिल्प, उनके परिवर्तन का मार्ग, वनपालों की जीवन पद्धति, जनजातियों के वैवाहिक रीति-रिवाज, आधुनिक जीवन शैली के कारण आदिवासी संस्कृति का विनाश, आदिवासी बच्चों की स्वास्थ्य शिक्षा, सोलिगास की स्वास्थ्य प्रणाली में हाल के परिवर्तन, कुल मिलाकर, यह वर्तमान समाज और सरकार को आदिवासियों की संस्कृति, रीति-रिवाजों, विचारों, परंपराओं और कठिनाइयों से अवगत कराने का एक साहसिक प्रयास है। और जनजातियों की अनूठी संस्कृति और जीवन शैली को आज के सभ्य विश्व से परिचित कराया जा रहा है। विशेषकर उन जनजातियों को जो स्वाभिमान का जीवन जीते हैं।

बीज शब्द :

जनजाती संस्कृति, विशिष्ट प्रकार के आचरण, सामाजिक उत्स, विवाह पद्धति, समुदाय संरक्षण, आपसी रिष्टे, समुदाय की नीति, पशुपालन, खानपान, धार्मर्कि आचरण आदि ।

प्रस्तावना :

जनजातीय अर्थव्यवस्था जंगलों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है। सदियों से आदिवासी जंगलों में या उनके किनारों पर रहते आए हैं और अपनी आजीविका के लिए पूरी तरह से जंगलों पर निर्भर हैं। आज भी वन उत्पाद कई आदिवासी समुदायों के लिए आय और जीविका का मुख्य स्रोत बने हुए हैं। ये समुदाय घोर गरीबी में जीवन यापन करते हैं, जिनके पास पूंजीगत परिसंपत्तियों, स्वास्थ्य और शैक्षिक सुविधाओं तक बहुत कम पहुंच है तथा प्रकृति की प्रतिकूलताओं से भी उन्हें कोई सुरक्षा नहीं मिलती। भारत में अपनाए गए वन संरक्षण उपायों ने न केवल जनजातीय वर्गों की खेती को खत्म कर दिया है, बल्कि आरक्षित वनों में और उसके आसपास रहने वाले आदिवासियों के जीवन को भी खत्म कर दिया है। इन उपायों ने वन आधारित गतिविधियों से अपनी आय प्राप्त करने के उनके दायरे को सीमित कर दिया है ।

मूल आलेख:

जनजाती संस्कृति :संस्कृति अर्थ और व्याख्यान

मानव संस्कृति की अध्ययन की दृष्टी से इस का अर्थ समझना सबसे महत्वपूर्ण बात है। मानविकी शस्त्र में से एक, लोककथा में मानव जीवन और मामलों के सभी तरीके शामिल हैं। इस प्रकार, यह मानव विरासत और उसके सभी चेहरों की अभिव्यक्ति का दस्तावेज रखता हैं मानव जाति अपनी सामाजिक जिम्मेदारी और इतिहास को आकार देने में कई शताब्दियों का समय लिया गया।

मानव के प्रागैतिहासिक अवधि के अवलोकन से पता चलता है कि वह अपने पैदाइष की शुरुआत में एक जंगली इंसान था। जनजातियों के लिए सत्तारूढ़ वर्ग के शासक वर्ग बने रहने का मुख्य कारण है। अक्षर ज्ञान की कमी मुख्य कारण था। इस प्रकार उनका उगम, मिथक, कला, साहित्य, संगीत, नीति, नियम हैं, जो कि नीति और वैकल्पिक रूप से दर्ज नहीं कर रहे हैं। लोग मौखिक विरासत के माध्यम से, उन्हें अपने लोगों की पीढ़ी में स्थानांतरित रूप से आए हैं इसे लोक संस्कृति कहा जाता है। जिन लोगों ने उपसंस्कृतियों को बनाए रखे है, उन्हें "जनजाति" कहा जाता है।

जनजाति के बारे में ती नं श्री कंठया ने कहा, "शहरों में रहने वाले लोगों को छोडकर पहाड़ियों और जंगलों में, महासागरों की पहाड़ियों में रहनेवाले लोगों को जनजाति के रूप में जाना जाता है। इन समाजों में रक्त संबंध बहुत महत्वपूर्ण हैं, और व्यक्तिगत-व्यक्ति संबंधों गहरा होता है और सांस्कृतिक रूप से कठिन नियम हैं, और बाहर के लोगों को अनुमान की नज़र से देखने का अभ्यास है। इन सामाजिक वर्गों की संस्कृति शहरी और ग्रामीण संस्कृतियों से बहुत अलग है। इन लोगों की अलग -अलग भाषा और जीवन है।

अंग्रेजी में, आदिवासी शब्द को खिडिडी कहा जाता है। यह लैटिन के खिदठा शब्द से आता है। इसका मतलब है कि एक ही परिवार के रक्त संबंध है। इसका मतलब है कि आदिवासी शब्द, परिवार का अर्थ कबीले और समूह को कहा जाता है। साथ ही समाजशास्त्रियों के पास आदिवासी की पृष्ठभूमि है। फराचिलिड नाम के मानवशास्त्री का कहना है "आदिवासी या आदिवासी समाज हैं, जो उन लोगों का एक सामाजिक समूह है, जो महसूस करते हैं कि कई रक्त रिश्तेदारों, उनकी अपना समूह या उपमहाद्वीप के बीच कई अंतर है, एक निश्चित भूमि क्षेत्र की एक निश्चित भाषा और एक ही सामाजिक और राजनीतिक प्रणाली के साथ जीते है जिसे जनजाती समाज कहाजाता है ।" जनजाति को एक समूह कहा जा सकता है, जो अपनी भाषा, धर्म और संस्कृति को पोषित करते आ रहा है। सभी जनजातियों को आमतौर पर जंगलों और पहाड़ी क्षेत्रों में, दुर्गम जंगलों के आसपास के क्षेत्र में देखा जाता है, जिसे अपनी संस्कृति को बनाए रखा और पोषित किया जाता है।

आदिवासी समुदायों की प्रकृति और विशेषताएं:

आदिवासी लोग भारत के सभी राज्यों में रहते हैं। कर्नाटक में उनके कई आवासों की पहचान की जा सकती है। वह ज्यादातर झोपड़ियों में रहते है। इस तरह की झोपड़ियों को हाडी कहा जाता है। हर जनजाति में एक नेता होता है। उस समुदाय के नायक की बात को हर कोई सुनता है । हवामान के अनुसार अनाज, फल, शहद आदि का उपयोग करते हैं। आम तौर पर आदिवासी समुदाय गरीबी रेखा के निचले हिस्से में आते हैं। स्वतंत्रता के बाद, अवधि के दौरान जनजातियों के अध्ययन पर अधिक ध्यान दिया गया था। भारत में, मध्य प्रदेश, उड़ीसा और असम में बड़ी संख्या में जनजातियाँ हैं। भले ही अन्य राज्यों में जनजातियाँ हैं, वे एक अलग – अलग वर्ग से संबंधित हैं। मानवशास्त्रीयों ने दक्षिण भारत में रहने वाले सिर्फ द्राविड आर्यों के बारे में अध्ययन किए हैं। लेकिन इससे पहले के मानव कुल के बारे में जानकारी हासिल नहीं हुई है । वे पहाड़ी-पहाड़ियों में रहते थे या नहीं उस सामग्री की जाँच करें और एकत्र करें ।

वेद, उपनिषद पौराणिक कथाओं और विज्ञान ग्रंथों के माध्यम से सीखना संभव था.* "भारत में शासन शुरू करने के बाद जनजातियों का अध्ययन मूल रूप से इस देश की संस्कृति को पेश करने के लिए आवश्यक था। चूंकि प्राचीन काल से वर्णव्यवस्था प्रणाली देखी गई है, इसलिए भारत में जाति और जनजातियों में अंतर दुनिया के अन्य देशों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। भारत की जनजातियों को तीन मुख्य क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है - दक्षिण क्षेत्र, मध्य पूर्व और पूर्वोत्तर दक्षिण क्षेत्र में: टोडा। सोलिगा, इरुला, चंचू, कोटा उरुली, जेनुकुरुबा, कादर, एडियन आदि दक्षिण भारतीय जनजातियों के हैं। पूर्वोत्तर क्षेत्र में, नागा, चांग, यचुमी, थकोमी, अखास, डापलर, मिकिर, मिरिस, अबोर, मिशित, कुकिस, आदि सहित पूर्वोत्तर राज्यों में देखने को मिलते है।

जनजातियों की प्रमुख विशेषताएं

समाज के सदस्य के रूप में ज्ञान, कला, संस्कृति सभी नीति, नियम, अभ्यास का आचरण मनाने की प्रथा को संस्कृति कहा जाता है। जिन लोगों ने इस तरह के विश्वास और परंपराओं को बनाए रखा है, उन्हें जनजाति कहा जाता है। "भारत में जनजातियों को अनुसूचित जनजातियों, पिछड़े जनजातियों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। पिछड़ी जनजातियों, बुडकट् जनजातियाँ कहा गया है। इन आदिवासी संस्कृतियों ने कुछ प्रावधान या नीती नियम हैं, जिससे वे सावधानी बरतते है। क्यों की बाहरी संस्कृति उन्हें दर्जा नहीं देती है। वे हमेशा अपनी संस्कृति की विशिष्टता को बनाए रखने के लिए किसी भी कठिन स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहते हैं। भारत में अनगिनत आदिवासी समुदाय हैं। ऐसी जनजातियों की अपनी महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं।

भौगोलिक अलगाव:

भारत में कई जनजातियाँ हैं। वह। सभी जनजातियाँ विभिन्न क्षेत्रों में पाई जाती हैं। सोलिगा समुदाय गिरी घाटियों में रहते हैं, पहाड़ी की तलहटी। फिर भी, कुछ पशुपालक जनजातियाँ मैदानों में पाई जाती हैं। प्रत्येक जनजाति के लिए अपनी एक निश्चित सीमा होती हैं भारत में कई आदिवासी समुदाय हैं। ऐसी जनजातियों की

अपनी महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। वे खाद्य या कंदमूल शिकार पशुधन, कृषि व्यवसाय और जीविका के लिए कई स्थानों का भ्रमण करते है। कर्नाटक के चित्रादुर्ग, बेल्लारी जिले और आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले। कुछ शहरी क्षेत्रों में घूमते हुए व्यापार व्यापार करने के सिलसिले में लंबाणी समुदाय चक्कर लगा रहा हैं।

विशिष्ट भाषा:

सामान्य नियम यह है कि एक आदिवासी होने के लिए, इसकी एक अलग भाषा होनी चाहिए। इस नियम को भारत की पृष्ठभूमि में पालन नहीं किया जा सकता है। भारत में अलग -अलग भाषा की जनजातियाँ भी हैं। असम की 'नागा' जनजातियों की एक स्वतंत्र भाषा है। यह बाकी जनजातियों पर लागू नहीं होता कुछ मामलों में, उनके आसपास के अन्य लोगों की भाषा का उपयोग भी किया जाता है। लम्बानी भाषा के लिए कोई अलग लिपी नहीं होति है। लिपी के बिना जनजातियाँ शैक्षणिक रूप से बहुत पिछड़े हैं। पड़ोसी क्षेत्रों के भाषा प्रभाव को आदिवासी भाषाओं पर देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, कर्नाटक। मासाबेदर ने तेलुगु मिश्रित कन्नड़ को बोलते निलगिरी पहाड़ियों में रहने वाले बडाग और टोडा अपनी भाषा का उपयोग कन्नड़, तेलुगु, तमिल, मलयाली और हिंदी में एक एक शब्द का प्रयोग करते है।

सामाजिक प्रणाली:

जनजातियों की अपनी अलग आंतरिक प्रणाली है। वे उन स्थानों के लिए विशिष्ट नामों से बुलाते हैं। उनके पंचायत, प्रशासन न्याय व्यव्स्था कठिन होती है। । कोई भी परंपरा, अनुष्ठान, पारिवारिक प्रणाली को तोड नहीं सकता है। समुदाय के नियमों को तोडने वालों को दंडित किया जाता है। कुछ जनजातियों को समुदाय से बाहर भी किया जा सकता है।

नाम में अलगाव:

भारत में कई जनजातियों के विशिष्ट नाम हैं। उदाहरण के लिए। नागा, बेड, गोंडा, शकरा, बदर, किरता, नायक, पलायकर, तलवारा, गुरुकर और अन्य नामों से जानेजाते हैं।

विशिष्ट प्रकार के आचरण :

धार्मिक अनुष्ठान करते समय ब्राह्मणों की विधिविधान में विरोधाभास है। वे जन्म, मृत्यु और विवाह जैसे विधिविधान को स्वयं करते हैं। । वे अपने आदिवासी वातावरण में बाहरी लोगों को नहीं जोड़ते हैं।

धर्म और संस्कृति:

पारंपरिक मूर्ति पूजा पाई जाती है। धार्मिक रवैये को उनके द्वारा किए जाने वाले हर काम में उजागर किया जाता है। जादू टोना, भूतों में विश्वास करते हैं, माना जाता है कि जीवन के हर पहलु में भगवान ही कारण है ऐसा माना जाता है। में सात-तरीकों का कारण है।

दैवत्व की कल्पना :

अधिकांश जनजाति पूजा के काबिल उस वर्ग के नायक को ही मानती हैं। जुनजप्पा, उपपप्पा, कथप्पा, पठप्पा, चित्रादेवर और कदीरिनारसिम्हा की चित्रदुर्ग के काडुगोल्ला पूजा करते है। लैम्बन्स सेवलला को द्रव्यमान के रूप में पूजते हैं, गदिपला नायक को उनके आदिवासी नायकों के रूप में पूजा करते हैं। जुनाजप्पा काडुगोल्ला वर्ग के लिए सबसे महत्वपूर्ण दैवी स्थान है।

राजनीतिक प्रणाली:

प्रत्येक समुदाय का अपना राजनीतिक शासन होता है। हर जनजाति में एक नेता होता है। नेता को नियमों को तोडनेवालों को दंडित करने का अधिकार है। "असम के नागा जनजाति में, जिसने भी अपने घर में लोगों के सर की खोपडी रखा है उसे नेता चुना जाता है। एक नेता का चयन करने का अभ्यास क्षेत्र से क्षेत्र में भिन्न होता है।, पूजरी, तलवारा, गुडिकट्टू, को विरासत में नायकत्व मिला है। उसके पास पूरे जनजातियों का नियंत्रण है।

सरल और खुला जीवन:

आदिवासी समुदाय एक सरल और खुला जीवन जीते हैं। उनके जीवन का तरीका बहुत सरल है। अंडमान द्वीप का ओंगे समुदाय अभी भी शिकार और मछली से ही जीने का गुजारा चलता है। उनके पास एक साधारण आहार कंदमूल ही है। वे जड़ी -बूटियों का उपयोग औषधी पदार्थों के रूप में करते हैं।

वंश परंपरा :

आदिवासी समुदायों में, उन्हें अपने रक्त संबंधों पर अधिक जोर दिया जाता है। कर्नाटक में उरू बेडा अपने सगे संबंधी ही मानते है। चचेरे भाई होने का दावा करता है। जनजातियों में, अपने ही वंशजों से विवाह होते हैं। व्यक्ति को अपनी प्रेमिका को अपने समुदाय से चुनना चाहिए। उन्हीं के साथ शादी की रस्म पूरी की जाती है।

एकता भावना:

आदिवासी लोगों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक एकता और रक्षा है। कोई भी उनके समुदाय को नहीं छोड़ेगा। अन्य लोगों को संदेह में देखा जाता है। बाहरी लोगों को किसी भी कारण से हमला करने की अनुमति नहीं है। यदि कोई हमला होता है, तो वे समुदाय के हित के लिए अपने प्राण की भी बली दे देंगे।

व्यवसाय

शिकार और पशुधन आदिवासी जनजातियाँ वित्तीय दृष्टिकोण से पशुपालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कई जनजातियाँ आज भी नीलगिरी जंगल में सोलिगा के नाम से जी रहे है। सरकारी की वन नीति से हार कर गाँवों में भी वास करने लगे है । कड़ी मेहनत करना और उस मेहनत में आदिवासी महिला कोई अपवाद नहीं है।

वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण प्रशासनिक प्रणाली ने जंगल को बांध निर्माण और जलाशयों के लिए इस्तेमाल कर रहे है। नतीजतन, जनजातियों के जीवन में बहुत सारे बदलाव हुए हैं। फिर भी उनकी

भाषा, संस्कार भगवान का विचार। न्याय व्यवस्था, जीवन चक्र के दौरान निभाए जाने वाले आचरण, जन्म और मृत्यु के आचरण, प्रकृति के प्रति प्रेम ने इन सबसे समझौता नहीं किया है। पिता-पुत्र का रिश्ता, पति-पत्नी के बीच प्रेम, प्रकृति प्रेम, बड़ों के प्रति आदर, ईश्वर के प्रति भक्ति और साहसिक कार्य की भावना, ये सभी आज भी इस जनजाति की विशेषताएं हैं। राम और कृष्ण, तथा सूर्य, चंद्रमा और उनकी जाति के देवताओं के बजाय पौधों, जानवरों और पक्षियों को देवता के रूप में पूजने की प्रथा आज भी जीवित है। कडुगोला के जुनजप्पा, कुरुबा के मैलारालिंगा, मसाबेडा के गोडली पलानायक और लम्बानी की सेवाबाई ऐसे महत्वपूर्ण देवता हैं।

आदिवासी स्वदेशी रीति-रिवाज़

आदिवासी लोगों द्वारा मनाए जाने वाले त्यौहार, अनुष्ठान, विश्वास और रीति-रिवाज़ हैं। ये उनकी सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक पर्यावरण के साथ गहरे संबंध को दर्शाते हैं। यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

फसल उत्सव: प्रकृति के उपहार के लिए धन्यवाद देने के लिए मनाया जाता है।

पूर्वजों का उत्सव: पूर्वजों का सम्मान करने और उनकी आध्यात्मिक मान्यताओं पर जोर देने के लिए मनाया जाता है।

सामाजिक उत्सव: समुदाय में एकता और भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है

पर्यावरण संरक्षण: कई जनजातियाँ अपने अनुष्ठानों के माध्यम से पर्यावरण को संरक्षित करने का प्रयास करती हैं।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान: त्यौहार विभिन्न जनजातियों के लिए अपनी परंपराओं को साझा करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करते हैं।

कुछ जनजातियों द्वारा मनाए जाने वाले कुछ त्यौहार:

भगोरिया महोत्सव (मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र): भील और भिलाला जनजातियों द्वारा मनाया जाने वाला एक वसंत उत्सव, यह प्रेम और नई शुरुआत का प्रतीक है। करमा महोत्सव (झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल): युवावस्था और उर्वरता के देवता को समर्पित यह त्योहार करम वृक्ष की शाखाएं रोपकर मनाया जाता है।

बैसाग (असम): बोडो जनजाति द्वारा मनाया जाने वाला एक नववर्ष उत्सव, जिसमें देवताओं, पूर्वजों और जानवरों की पूजा की जाती है। न्योकुम युल्लो महोत्सव (अरुणाचल प्रदेश): नैशी जनजाति द्वारा मनाया जाने वाला फसल उत्सव, जिसमें पूर्वजों और प्रकृति की आत्माओं का सम्मान किया जाता है। बस्तर (छत्तीसगढ़) का आदिवासी दशहरा: 75 दिनों तक चलने वाला दशहरा उत्सव आदिवासी समुदाय की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है। महाराष्ट्र): वारली जनजाति प्रकृति और उनकी जीवनशैली को दर्शाती है। आदिवासी रीति-रिवाज उनकी जीवनशैली का अभिन्न अंग हैं और उन्हें संरक्षित करना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष:

कूर्ग की जनजातियाँ विशेष रूप से जेनु कुरुबा, कुड़िया, येरवा और मेदा सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े हुए हैं। ऐसी कोई जनजाति नहीं है जो अपने मूल निवास और जीवन पद्धति पर कायम हो। उन्हें या तो अपने मूल घरों से बाहर आने के लिए मजबूर किया गया है या फिर उन्होंने स्वेच्छा से जीवन जीने के नए साधन खोज लिए हैं। आधुनिकीकरण ने भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यद्यपि हाल के वर्षों में साक्षरता दर उल्लेखनीय है, लेकिन बीच में स्कूल छोड़ने की दर भी ज्यादा है। आदिवासियों को अपने बच्चों को स्कूलों में भेजने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है, विशेष रूप से उनके बच्चों के लिए उनकी बस्तियों के निकट खोले गए आश्रम स्कूलों में पढने का अवसर देना चाहिए। इससे उन्हें अच्छी शिक्षा प्राप्त करने में मदद मिलेगी ताकि भविष्य में उन्हें अच्छी नौकरियां मिल सकें, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार होगा। प्रस्तावित कार्यक्रमों का समुचित उपयोग हो, आदिवासियों की समर्पित भागीदारी और आत्म-जागरूकता बेहतर जीवन के लिए वर्तमान समय में महत्वपूर्ण पहलू हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1.तीन : काडुगोल्लरा संप्रदाय, मैसोर विश्वविद्यालय, प्र. 982

2.ट्राइबल कल्चर एंड मोबिलिटी - एम गुरलिंगैया, अनमोल पब्लिशिंग, नई दिल्ली, प्र. 2000,

3.कर्नाटक भागीदार - बारगुरु रामचंद्रप्पा, कन्नड़ विकास प्राधिकरण, बैंगलोर -प्र. 2002,पृ. 91,

4.कर्नाटकदा बुडकटू समाजगलू - डॉ. तारिहल्ली हनुमंथप्पा, कणजा कन्नड कृति, बेंगलुरु.